इकाई 1   भाषा क्या है? मानव भाषा की विलक्षण विषेषताएँ

इकाई की रूपरेखा

1.0 प्रस्तावना

1.1 उद्देष्य

1.2 भाषा की परिभाषाएँ

1.3 भाषा का उद्‌भव

1.4 भाषा के प्रकार्य

1.5 किसी भाषा का ज्ञान

1.6 मानव भाषा की विलक्षणता

1.7 सारांष

1.8 बोधप्रष्नों के उत्तर

1.9 अन्य उपयोगी पुस्तकें

1.0 प्रस्तावना

हमबोल्ट के अनुसार, ”मनुष्य केवल भाषा के कारण ही मनुष्य है”।

अतः यह विलक्षण सुविधा क्या भाषा है, जो हमें अन्य प्राणियों से अलग करती है, हमें अपने परिवेष के प्रति अनुक्रिया करने में मदद करती है और सबसे बड़ी बात यह है कि हमें हमारे अस्तित्व के सत्व (मूल तत्व) पर विचार करने योग्य बनाती है? भाषा वह प्रणाली है जिसके द्वारा ध्वनियाँ और उनके अर्थ परस्पर संबंधित है (फ्रॉमकिन और रोडमैन, 1974)। भाषा संप्रेषण और मनुष्य की आवष्यकताएँ निर्विवाद रूप से जुड़े हुए हैं। मनुष्यों की विविध आवष्यकताएँ होती हैं, जैसे व्यक्तिगत, सामाजिक, भावनात्मक, आर्थिक,

राजनीतिक और सांस्कृतिक–और इनकी पूर्ति के लिए मनुष्यों के भाषा की जरूरत होती है। नवजात षिषुओं को भी भाषा की जरूरत होती है जो सबसे पहले मुख्य रूप से उनकी जैविक आवष्यकताओं को व्यक्त करने के लिए होती हैं। जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं और उनकी आवष्यकताएँ अधिक जटिल होती जाती हैं वैसे–वैसे ही उनकी भाषा भी जटिल होती जाती है। बचपन में तकलीफ में कराहने और खुषी में खिलखिलाने की अवस्था से धीरे–धीरे व्यक्ति उस अवस्था तक पहुँच जाता है, जहाँ वह अपनी आवष्यकताओं को दर्षा सकता है।

भाषा किसी निर्वात में विद्यमान नहीं होती। यह मनुष्य की आवष्यकता की पूर्ति करती है और मानव मस्तिष्क की अन्य प्रणालियों द्वारा नियंत्रित होती है। भाषा का प्रयोग विचारों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है अतः इसकी संरचना और कार्यों में ये विचार प्रतिबिंबित होने चाहिए। इसके अलावा एक बात यह भी है कि भाषा एक जटिल सामाजिक और सांस्कृतिक प्रणाली के भीतर विद्यमान होती है अतः यह इन पक्षों के अनुरूप ढल जाती है। भाषा हमारे जीवन के सभी पहलुओं में व्याप्त है और इसमें भी हमारे जीवन के सभी पहलू व्याप्त हैं।

1.1 उद्देष्य

इस इकाई को पूरा पढ़ लेने के पष्चात् आपः

- विविध भाषा विज्ञानियों और विद्वानों द्वारा दी गई भाषा की परिभाषाओं का आलोचनात्मक रूप से विष्लेषण कर सकेंगे ;
- भाषा के कार्यों को समझ सकेंगे;
- भाषा के उद्भव के विविध सिद्धांतों की चर्चा कर सकेंगे;
- भाषा को संप्रेषण के अन्य रूपों से, विषेष रूप से जीव जंतु संप्रेषण से पृथक कर सकेंगे;

1.2 भाषा की परिभाषाएँ

भाषा एक ऐसा पद है जिसके अनुप्रयोगों का क्षेत्र विस्तृत है और इस वजह से इसकी कई परिभाषाएँ दी गई हैं। इनमें से कुछ परिभाषाओं में ' भाषा' की सामान्य संकल्पना पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जबकि अन्य परिभाषाओं में किसी भाषा के कुछ अधिक विषिष्ट पहलुओं पर तथा कुछ अन्य परिभाषाओं में इसकी अधिक औपचारिक विषिष्टताओं जैसे ध्वनिग्रामविज्ञान, व्याकरण और अर्थविज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इनके अलावा कुछ ऐसी परिभाषाएँ भी हैं जो भाषा के विविध कार्यों पर बल देती है, अथवा वे परिभाषाएँ हैं जो मानव तथा जीव–जंतु संप्रेषण के अन्य रूपों और भाषा के बीच की भिन्नताओं पर ज़ोर देती हैं। नीचे दी गई विभिन्न प्रकार की परिभाषाएँ इस विषय पर विस्तार से प्रकाष डालती हैं।

"भाषा यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की ऐसी व्यवस्था है जिसके माध्यम से समाज के लोग अपनी–अपनी पूर्ण संस्कृति के अनुसार परस्पर संप्रेषण करते हैं"। (जी. ट्रेगर, 1949)

"भाषा विचारों एवं भावों को यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से संप्रेषित करने की पूर्णतया मानवीय एव असहजवृत्तिक विधि है"। (ई.सपीर, 1911)

"भाषा समापिका (पूर्ण) एवं असमापिका (अपूर्ण) वाक्यों का ऐसा समुच्चय है, जिसका प्रत्येक वाक्य लंबाई में पूर्ण होता है और तत्वों के पूर्ण समुच्चय से निर्मित होता है"। (एन. चोमस्की, 1957)

"भाषा एक ऐसी संस्था है जिसके माध्यम से मनुष्य आभ्यासिक रूप से प्रयुक्त मौखिक, श्रव्य, यादृच्छिक प्रतीकों के माध्यमों से एक–दूसरे से बातचीत और संप्रेषण करते हैं"। (आर.ए. हॉल, 1964)

"ऐसी श्रव्य, सुस्पष्ट सार्थक ध्वनियाँ जो उच्चारण अवयवों के कार्य–व्यापार से उत्पन्न होती हो"। (वेबस्टर की थर्ड न्यू इन्टरनेषनल डिक्षनरी, वॉल्यूम 2, 1971)

"भाषा सार्थक संप्रेषण के लिए मनुष्य जाति के लिए उपलब्ध सर्वाधिक परिष्कृत और सार्वभौमिक माध्यम है"। (ब्राउन, 1984)

"भाषा यादृच्छिक ध्वनि संकेतों की अभिरचित प्रणाली है। जिसकी विषेषताएँ हैं संरचनागत, निर्भरता, सृजनात्मकता, विस्थापन, द्वैतता और सांस्कृतिक संप्रेषण"। (ऐटकिसन, 1987)

बोध प्रष्न 1

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) आपने भाषा की विविध परिभाषाएं पढ़ी हैं। अब भाषा की अपनी परिभाषा लिखिए।

....

....

....

....

2) इन परिभाषाओं से भाषा के किन–किन कार्यों की जानकारी मिलती हैं? किन्हीं दो कार्यों की जानकारी दीजिए।

....

....

....

....

1.3 शषा का उद्‌भव

भाषा पषु संकेतन का अत्यधिक विकसित रूप प्रतीत होती है। लेकिन प्रष्न यह है कि हमने कब और कैसे बातचीत करना शुरू किया। अनेक विचारकों ने भाषा के उद्‌भव के बारे में अनुमान लगाए हैं, जिसके परिणामस्वरूप हमारे पास इससे संबंधित सिद्धांतों का विस्तृत संग्रह है। यह एक ऐसा प्रष्न है जो आज भी काफी ध्यान आकर्षित करता है।

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में भाषा के उद्‌भव संबंधी सिद्धांतों में यह प्रतिपादित किया गया कि भाषा दैवीय उत्पत्ति थी। उनके अनुसार मनुष्य की रचना की गई थी और उसकी रचना के समय ही एक दैवीय उपहार के रूप में उसे वाणी प्रदान की गई। बाईबल की गार्डन ऑफ ईडन की कहानी में ईष्वर ने आदम और वाणी की एक साथ रचना की, क्योंकि ईष्वर ने आदम से बात की और आदम ने ईष्वर की बात का उत्तर दिया। उनके बीच जिस भाषा का प्रयोग हुआ वह हिब्रू थी।

अन्य संस्कृतियों ने भी भाषा की दैवीय उत्पति का प्रचार किया गया। उदाहरण के लिए मिश्रवासी स्वयं को प्राचीनतम सभ्यता से संबंधित मानते हैं और इसलिए उनके अनुसार उनकी भाषा आदि (मूल) भाषा थी, जो उन्हें उनके ईष्वर पूर्वज द्वारा प्रदान की गई थी। कहा जाता है कि उनके एक शासक पजमेटिचूज ने इस सिद्धांत की जांच करने के लिए एक परीक्षण किया था। उसने एक साधारण परिवार के दो बच्चों को एकांत में पाला। जब वे बच्चे दो वर्ष के थे उन्होंने अचानक ही कहा "बीकोस", जिसका फ्रीजियन भाषा में अर्थ है "रोटी"। इस शासक का विष्वास था कि इससे उसका यह सिद्धांत सही सिद्ध हुआ कि फ्रीजियन आदि (मूल) भाषा थी। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, जोहान गोटफ्राइड वॉन हर्डर के प्रकाषन "ऑन द ओरिजन ऑफ लेंग्वेज" (1772) के साथ भाषा की उत्पत्ति से संबंधित अनुमान दैवीय उत्पत्ति और कल्पना के क्षेत्र से दूर हो गए और इसे "जैविक अवस्था" कहा गया। उनके अनुसार भाषा इतनी अपूर्ण थी कि यह दैवीय उपहार हो ही नहीं सकती थी, यह तो विवेचन एवं तर्क के प्रति मनुष्य के अपने खुद के खोजी प्रयासों से उत्पन्न हुई। वॉन हर्डर का तर्क था कि "भाषा एक सहज वृत्तिक आवेग का परिणाम थी। बिल्कुल उसी तरह जैसे एक भ्रूण जन्म लेने के लिए जोर लगाता है"।

डार्विन ने भाषा की किसी विषिष्ट "मानव" विषेषता के विरूद्ध तर्क दिया। अपनी कृति "डीसेंट ऑफ मैन" (1871), में उन्होंने प्रस्तावित किया कि मनुष्य की भाषा और जीव–जंतुओं की आवाज के बीच केवल यात्रा (डिग्री) का ही अंतर है। उनके अनुसार मानव भाषा अधिक आदिय रूप से आई, संभवतः भावों की अभिव्यक्ति से। उदाहरणार्थ, अवहेलना की भावना व्यक्त करते समय नाक या मुँह द्वारा हवा बाहर फेंकने की क्रिया की जाती है और इससे 'पूहे' या 'पिष' जैसी ध्वनियाँ निकलती हैं। डार्विन के समकालीन मैक्समूलर उनसे सहमत नहीं थे और उन्होंने मजाक उड़ाते हुए इसका नाम "पूह–पूह सिद्धांत" रख दिया।

मैक्समूलर ने भाषा के उद्भव का जो सिद्धांत प्रतिपादित किया उसे उन्होंने "डिंग–डांग सिद्धांत" का नाम दिया। उनके सिद्धांत के अनुसार ध्वनि और अर्थ के बीच एक रहस्यपूर्ण सहसंबंध था। आदिय मानव में एक सहज वृत्ति होती थी, जिसके द्वारा बाहर का प्रत्येक प्रभाव अंदर से शाब्दिक अभिव्यक्ति ग्रहण करता था। जिस प्रकार कोई वस्तु जब किसी ठोस पदार्थ से टकराती है तो एक विषिष्ट आवाज निकलती है, बिल्कुल उसी प्रकार मनुष्यों का मस्तिष्क भी जगत द्वारा अपने ऊपर छोड़े जाने वाले विविध प्रभावों के प्रति एक विषिष्ट प्रतिक्रिया प्रस्तुत करता है। मूलर ने बाद में स्वयं अपने ही सिद्धांत को अस्वीकृत कर दिया।

मूलर ने वो–वो (बाउ–वाउ) नामक एक अन्य सिद्धांत को प्रतिपादित किया। इसे अनुरणनमूलक (ओनोमाटो पोइटिक) या प्रतिध्वनिक (ईकोइक) सिद्धांत भी कहते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार प्राथमिक शब्द प्राकृतिक ध्वनियों के अनुकरणात्मक प्रतिरूप थे जेसे चिड़ियों की चहचहाहट, पषुओं की आवाजें आदि। यद्यपि मूलर ने इस सिद्धांत को भी अस्वीकृत कर दिया, परन्तु यह सच है कि वास्तव में प्रत्येक भाषा की शब्दावली में प्रतिध्वनिक शब्दों का कुछ प्रतिषत तो होता है। बेबल, रेटल, रिपल आदि अंग्रेजी भाषा के कुछ शब्द इसका उदाहरण है। इसके विरूद्ध एक तर्क यह दिया गया है कि हम अपनी पहली भाषा की परिसीमाओं के अंतर्गत प्रकृति की ध्वनियों को सुनते हैं और उनका अनुकरण करते हैं। इस सांस्कृतिक प्रभाव का एक लोकप्रिय उदाहरण है। पालतू मुर्गों

की बाँग–अंग्रेजी में यह कॉक–अ–डूडल–डू है, फ्रांसीसी भाषा में कॉक्युरीको, रूसी भाषा में कुकूईकू, जर्मन में किकेरीकी, आदि।

आधुनिक सिद्धांतवादी यह प्रतिपादित करते हैं कि वाणी शारीरिक अवयवों का कार्य साधन मात्र ही नहीं है। भाषा के विकास के लिए सहगामी मनोवैज्ञानिक विकास भी अनिवार्य है। प्रत्येक व्यक्ति की जगत के बारे में अपनी अलग धारणा होती है। हर व्यक्ति का दुनिया को देखने का नजरिया अलग होता है। भाषा के उद्भव के एक विष्वसनीय सिद्धांत की रचना करने के लिए यह आवष्यक है कि आदिय मानव के मनोवैज्ञानिक विकास के बारे में जानकारी प्राप्त की जाए।

मानवविज्ञानियों का विष्वास है कि जिन कारकों के कारण होमोसेपियन्स जातियों का विकास हुआ, उन्हीं कारकों से भाषा का भी विकास हुआ–सीधे खड़े अंगविन्यास से लोगों का दृष्टि क्षेत्र व्यापक हुआ, उनको आँखें त्रिविम हो गई, जिससे उनकी दृष्टि और बेहतर हुई। प्रमस्तिष्कीय वल्कल (कार्टेक्स) जो निम्नतर प्राणियों में वास्तव में नहीं होता, विकासषील मानव में आष्चर्यजनक रूप से विकसित हुआ। इस प्रमुख विकास के कारण ही मनुष्यों में धीरे–धीरे तर्कणाषक्ति का विकास हुआ और वे बोलने लगे।

भाषा का विकास मनुष्य की संप्रेषित करने की आवष्यकता से हुआ। यह सामाजिक स्थिति में विकसित हुई और एक समूह के सदस्यों के बीच सूचना के प्रसार के लिए इसकी जरूरत पड़ी। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के अनुभव के बारे में जानकारी पाकर लाभ हुआ। बाद में श्रम के विभाजन द्वारा मानव समाज का पूरा कार्य–संचालन भाषा के कारण हुआ। समाज में जटिलता की वृद्धि के साथ, भाषा के विकास में सहगामी बढ़ोतरी हुई।

बोध प्रष्न 2

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) उस सिद्धांत को क्या नाम दिया गया है जिसके अनुसार मनुष्य की बोली का उद्‌भव उन ध्वनियों से हुआ जो लोगों ने अपने परिवेष में सुनीं?

....

....

....

....

2) लोग बातचीत क्यों करते हैं? इसके तीन कारण बताइए।

....

....

....

....

3) क्या आप अपनी मातृभाषा की किन्हीं अनुरणनमूलक ध्वनियों के बारे में बता सकते हैं? ऐसी ध्वनियों को सूचीबद्ध कीजिए।

....

....

....

....

1.4 भाषा के प्रकार्य

भाषा कैसे प्रारंभ हुई यह अभी भी एक पहेली बनी हुई है, लेकिन यह स्पष्ट दिखाई देता है कि यह क्यों विकसित हुई। जैसा कि जीन ऐटकिसन का कहना है कि भाषा शायद इस कारण से शुरू हुई कि मनुष्य को जीने के लिए आपसी सहयोग की जरूरत थी और सक्षम सहयोग के लिए संप्रेषण की संतोषजनक प्रणाली आवश्यक थी।

भाषा एक जटिल तथ्य है और इसके बहुत से प्रकार्य होते हैं। कई भाषा विज्ञानियों ने भाषा के प्रकार्यों को समझने और समझाने का प्रयास किया है। रोमन जेकबसन ने भाषा के छह प्रमुख कार्य निर्धारित किए है, जिसके अनुसार मौखिक संप्रेषण के प्रभावी कार्य का वर्णन किया जा सकता है। ये कार्य निम्नलिखित हैं :

संदर्भगत कार्य

यह कार्य मुख्य रूप से सूचना को संप्रेषित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो भाषा की खोज करने का एक प्रमुख कारण था। स्थितियों, वस्तुओं और यहां तक कि मानसिक स्थितियों का वर्णन भी इसके अंतर्गत आता है।

अभिव्यंजक (भावबोधक) प्रकार्य

यह कार्य वक्ता अथवा लेखक की भावनाओं और अभिवृत्तियों की प्रस्तुति करता है और इसके द्वारा श्रोता अथवा पाठक में भावनाएं उत्पन्न करने का कार्य भी किया जाता है। संप्रेषण का यह रूप तब भी कार्य कर सकता है जब हम अकेले हों। उदाहरणार्थ, यदि हमारा मोबाइल फोन पानी की बाल्टी में गिर जाए तो आपके विचार से हम खुद से क्या कहेंगे? संभवतः हम किसी अपषब्द का प्रयोग करेंगे। हम उस समय सकारात्मक भावनाओं को भी व्यक्त करने वाले शब्दों का उच्चारण कर सकते हैं, विषेष रूप से जब हम किसी अत्यधिक सुंदर वस्तु, व्यक्ति या दृष्य को देखें, और खुद से कहें कि "वाह यह कितना सुंदर है"।

निदेषात्मक प्रकार्य

इस कार्य में संबोधित व्यक्ति सीधे ही संबद्ध होता है और इसका प्रयोग सामान्यतः किसी कार्य को प्रारंभ करने या रोकने के लिए किया जाता है। इसलिए यह आदेषों अथवा निवेदनों में पाया जाता है और इसमें संबोधनात्मक और आज्ञा/प्रार्थना सूचक शब्दों के प्रयोग की अपेक्षा होती है, उदाहरणार्थ "अदिति, फौरन इधर आओ", "कृपया खिड़की बंद कर दो"।

फैटिक (Phatic) प्रकार्य

भाषा के इस कार्य का संबंध सामाजिक संप्रेषण से है। यह कार्य अभिवादनों में देखा जा सकता है जैसे–"जी आप कैसे हैं? और मौसम के बारे में अनौपचारिक चर्चा में भी जैसे– "आजकल कितनी गर्मी पड़ रही है"।

काव्यात्मक प्रकार्य

इस कार्य में स्वयं के लिए संदेष पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाता है और इसका प्रयोग कविता और नारों में किया जाता है। यह भाषा का सौंदर्यपरक कार्य है।

भाषाविज्ञानी (Metalingual) प्रकार्य

यह कार्य भाषा के बारे में ही चर्चा करने के लिए किया जाता है, जैसा कि हम इस इकाई में कर रहे हैं।

परंतु, प्रयुक्ति के किसी अंष के लिए इसका प्रयोग विरल ही होता है केवल किसी एक ही कार्य को करने के लिए। हाँ, अगर वह वार्ता का बहुत ही विषिष्टीकृत और प्रतिबंधी अंष हो तो ऐसा हो सकता है, अधिकांष साधारण प्रकार की वार्ताएँ मिश्रित होती हैं।

बोध प्रष्न 3

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं, जो किसी एक प्रकार्य को अभिव्यक्त कर रहे हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने उपयुक्त प्रकार्य का नाम लिखिए।

1) ऐसा लगता है कि बारिष होगी, है ना?

2) थकी आँखें

दुखते पैर

सीट पाने के लिए लड़ते यात्रीगण।

3) मेरे कागज मत छुओ।

4) भारत में आधारभूत द्विभाषिकता की प्राचीन परंपरा है।

5) यह तस्वीर कितनी सुंदर लग रहा है।

6) वह स्थान बहुत साफ सुथरा देता था।

....

....

....

....

1.5 किसी भाषा का ज्ञान

जब लोग इकट्ठे होते हैं तो वे भाषा का प्रयोग करते हैं। हम अपने दोस्तों और परिचित व्यक्तियों के साथ अपने विचारों को संप्रेषित करने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं। कहते हैं कि यह वह सुविधा है जो मनुष्यों को जीव–जंतुओं से अलग करती है। लेकिन हम अपनी इस श्रेष्ठ योग्यता पर बहुत कम चिंतन करते हैं, जो हमारी मानवता का आधार है। वस्तुतः भाषा का हमारा प्रयोग इतना सहज और स्वाभाविक है कि इस पर हम इससे ज्यादा ध्यान नहीं देते, जितना हम अपनी श्वसन क्रिया या दिल के धड़कन पर देते हैं। हम भाषा पर अपना पूरा हक समझते हैं। सिर्फ कुछ समय के लिए ही यह कोषिष और कल्पना कीजिए कि बिना भाषा के हमारी जिंदगी कैसी होती। यदि असंभव नहीं तो बेहद कठिन अवष्य होती। तो फिर यह भाषा नामक विलक्षण चीज है क्या? जब हम यह कहते हैं कि हम इस भाषा को "जानते" हैं तो इसका क्या अभिप्राय होता है?

सामान्यतः जब हम यह कहते हैं कि हम इस भाषा को बोल सकते हैं और इस भाषा को जानने वाले लोग हमें समझ सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम कुछ ऐसी ध्वनियाँ

उत्पन्न कर सकते हैं जो स्वाभाविक रूप से भाषांतरण योग्य हैं और उनका विषिष्ट अर्थ है।

अब चूँकि हम सब लोग कम से कम एक भाषा जानते हैं और उसका प्रयोग कर सकते हैं बिना कोई चेतन प्रयास किए, तो फिर हमें इसकी चर्चा करने की क्या आवष्यकता है? यथार्थ में यही इस इकाई का उद्देष्य है–हमें इस बारे में जागरूक बनाना कि सरलतम वार्तालाप करने की क्षमता के लिए भाषा की गहन जानकारी अपेक्षित होती है जिसके बारे में वक्ता अनभिज्ञ होते है। कोई वक्ता अत्यधिक क्लिष्ट वाक्य बोल सकता है। बिना यह जाने कि उन वाक्यों की रचना के नियम और सिद्वांत क्या हैं?

अतः यह जानना जरूरी है कि किसी भाषा के वक्ता जो विषिष्ट ज्ञान रखते हैं वह क्या है? दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि किसी भाषा के ज्ञान से क्या तात्पर्य है?

1.5.1 ध्वनि व्यवस्था का ज्ञान (जानकारी)

जब हम कहते हैं कि हम कोई भाषा जानते हैं तो हमारा यह अभिप्राय होता है कि हम जानते हैं कि कौन–सी ध्वनियां उस भाषा का हिस्सा है और कौन सी ध्वनियाँ उसका हिस्सा नहीं हैं। यह बात उस समय सुस्पष्ट हो जाती है जब किसी विषेष भाषा के वक्ता किसी अन्य भाषा के शब्दों को उच्चारित करते हैं। उदाहरणार्थ–बंगाली, असमी या उड़िया भाषा के वक्ता 'ब' और 'व' की ध्वनियों के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से नहीं बोल पाते। अतः जब वे 'विवेक' बोलते हैं तो 'बिवेक' सुनाई देता है। यह तथ्य कि वे इस शब्द का गलत उच्चारण कर रहे हैं स्वयं ही दर्षाता है कि वे इस बात से अनभिज्ञ हैं। वे इन शब्दों में तभी अंतर देख पाते हैं जब वे इन्हें लिखित रूप में देखते हैं या जब कोई दूसरा व्यक्ति इन शब्दों को बोल रहा हो लेकिन वे खुद इस अंतर को सही रूप से नहीं बोल पाते।

इतना ही काफी नहीं है कि एक भाषा के वक्ता अपनी भाषा को केवल अनुमेय ध्वनियाँ की ही जानकारी रखें–उन्हें अनुमेय ध्वनि संयोजनों की भी अचेतन जानकारी होती है और उस स्थिति की भी जिसमें ये ध्वनियाँ किसी शब्द में आ सकती हैं। जब एक भाषा

का वक्ता कोई ऐसा शब्द सुनता है जिसका ध्वनि संयोजन उसकी भाषा में अनुमेय ध्वनि संयोजन से भिन्न होता है तो इस बात की पूरी संभावना रहती है कि वह उस शब्द का गलत उच्चारण करेगा।

1.5.2 शब्दों के अर्थ का ज्ञान

किसी भाषा के ज्ञान का यह भी अर्थ है कि आप यह जानते हों कि ध्वनि को अर्थ से कैसे जोड़ा जाए अर्थात् ध्वनियों और ध्वनि रूपों की जानकारी के अलावा, यह जानना जरूरी है कि विषिष्ट ध्वनि अनुक्रम अर्थों के सूचक होते है। यह बात तब स्पष्ट हो जाती है जब हम कोई 'विदेषी' अथवा अनजान भाषा सुनते हैं। क्योंकि उस भाषा का वक्ता जिस अक्षर माला को प्रस्तुत करता है वह हमारे लिए अबोधगम्य होती है परंतु यह दिखाई देता है कि वक्ता एक–दूसरे से अच्छा संप्रेषण कर रहे हैं। इससे हमें यह भी ज्ञात होता है कि ध्वनि और उससे सूचित होने वाले अर्थ के बीच का संबंध यादृच्छिक है।

बहुत–सी भाषाओं की अनेक ध्वनियाँ एक–सी होती हैं लेकिन जिस तरीके से शब्द बनाने के लिए उन भाषाओं में उन्हें जोड़ा जाता है और एक से ही संयोजन के लिए जो अर्थ निर्धारित किए जाते हैं वे एक से नहीं होते हैं। इससे कई बार बड़े मजेदार परिणाम दिखाई देते हैं। उदाहरणार्थ–बल्गेरियन और हिंदी दोनों भाषाओं में एक ध्वनि अनुक्रम 'कुतिया' एक जैसा है जिसका अर्थ बल्गेरियन में 'बक्सा' है जबकि हिंदी में इसका अर्थ है 'मादा कुत्ता'। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ध्वनि और इससे जुड़े अर्थ किस प्रकार यादृच्छिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि एक विषिष्ट संकल्पना विभिन्न भाषाओं में विभिन्न ध्वनि अनुक्रमों द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

अधिकांष भाषाओं में ऐसे शब्द होते हैं जिनके उच्चारण से ही उनका अर्थ समझ में आ जाता है। इन्हें अनुकरणमूलक या प्रतिध्वनिक शब्द कहते हैं। इन शब्दों की ध्वनियाँ प्रकृति की ध्वनियों का अनुकरण करती हैं। परंतु इनमें भी प्रत्येक भाषा में विविधता पाई जा सकती है। इसका सर्वाधिक प्रचलित उदाहरण मुर्गे की बाँग है जिसके बारे में हम इस इकाई में पहले बता चुके हैं।

कभी–कभी कोई विषिष्ट अंतिम ध्वनि एक विषिष्ट अर्थ की सूचक होती है। जैसे हिंदी में 'ई' से खत्म होने वाले शब्द लघुतावाचक शब्द या स्त्रीलिंग वाचक के परिचायक होते हैं। जैसे–डिब्बी, लाड़ली आदि।

परंतु कोई व्यक्ति यदि किसी भाषा की सभी सही ध्वनियों और उनके अर्थों की जानकारी रखता हो तब भी वह यह नहीं कह सकता कि वह उस भाषा को जानता/जानती है। किसी भाषा का ज्ञान होने का यह भी तात्पर्य है कि आप यह जानते हों कि किस प्रकार शब्दों को जोड़कर शब्दावली बनाई जाती है और तत्पष्चात् शब्दावलियों को जोड़कर किस प्रकार वाक्य बनाए जाते हैं। चूँकि एक व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह किसी भाषा के सभी संभव वाक्यों को याद रख सके, अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि भाषा प्रयुक्त करने का अर्थ सृजनात्मक होना भी है, क्योंकि कोई व्यक्ति ऐसे बहुत से वाक्य बोलता है जो उसने पहले बोले या सुने नहीं होते। वास्तव में भाषा की सृजनात्मकता का यही अर्थ है, अर्थात् ऐसे नवीन वाक्य 'सृजित' करने और समझने की व्यक्ति की क्षमता जो उसने पहले कभी न बोले हों।

1.5.3 उपयुक्त सामाजिक संदर्भ का ज्ञान

केवल नए वाक्य बना लेना ही पर्याप्त नहीं है। आपको सही–सही यह भी पता होना चाहिए कि उन वाक्यों का प्रयोग कहां किया जा सकता है। अर्थात् उन वाक्यों के प्रयोग के लिए उपयुक्त संदर्भों की भी जानकारी होना आवष्यक है। प्रभावी रूप से संप्रेषण करने के लिए, हमें ज्ञात होना चाहिए कि किसी विषिष्ट स्थिति में किस प्रकार के प्रत्युत्तर की अपेक्षा की जाती है। यदि कोई आपसे आपका नाम पूछे और आप उत्तर दें कि 'मौसम बहुत अच्छा है' तो यह उपयुक्त नहीं होगा। हालांकि आपका उत्तर व्याकरण की दृष्टि से गलत नहीं होगा। शब्द और स्वराघात (टोन) ध्वनि में यह विषेषता होती है कि वे वस्तुओं और विचारों से संबंधों का ध्यान दिला देते हैं और संप्रेषण उस मात्रा तक संभव हो जाता है जिस मात्रा तक वक्ता और श्रोता के एक से संबंध होते हैं। अतः शब्द और स्वराघात (टोन) अर्थपूर्ण/सार्थक प्रतीक होते है। चूँकि संदर्भ द्वारा ही अर्थ को

निर्धारित और परिवर्तित किया जाता है। अतः हमें संदर्भ को भी अर्थ की क्षमता रखने वाला मानना होगा।

इस प्रकार भाषा में ध्वनियाँ, शब्द और संभावित वाक्य निहित होते है। जब हम यह कहते हैं कि हम इस भाषा को जानते हैं तो हमारा यह तात्पर्य होता है कि हम उसकी ध्वनियों और शब्दों को तथा उनके संयोजन के नियमों और उपयुक्त सामाजिक संदर्भों में उनके प्रयोग की जानकारी रखते हैं।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) क्या सामाजिक संदर्भ की जानकारी के बिना किसी भाषा का ज्ञान हो सकता है? उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

2क) अपनी मातृभाषा की ध्वनियों की एक सूची बनाइए।

....

....

....

....

2 ख) अब यह बताइए कि इनमें से कौन–सी ध्वनियाँ किसी दूसरी भाषा जैसे कि अंग्रेजी में नहीं पाई जातीं।

....

....

....

....

2ग) ऊपर 2(ख) में लिखी ध्वनियों वाले शब्दों का उच्चारण करने में क्या आपको कठिनाई होती है। यदि हाँ, तो आपके विचार से ऐसा क्यों होता है?

....

....

....

....

1.6 मानव भाषा की विलक्षणता

यह भाषा ही है जो मनुष्य को जीव–जन्तुओं से अन्य प्रभाव की अपेक्षा पृथक करती है। हम अक्सर यह उल्लेख करते हैं कि भाषा मानव जाति के लिए एक विलक्षण वस्तु है। आइए अब विचार करें कि मानव भाषा के संबंध में मानव से क्या अभिप्राय है और यह अन्य प्राणियों द्वारा उत्पन्न संप्रेषण के रूपों से किस प्रकार भिन्न है?

यह सामान्यतः स्वीकारा और माना जाता है कि भाषा का संबंध संप्रेषण से है। इस संप्रेषण का स्वरूप और क्षेत्र विविध कारकों जैसे–षारीरिक, परिवेषगत, सामाजिक और आवष्यकता आधारित कारकों से प्रभावित होता है। सूचना की विषय–वस्तु की जटिलता के बढ़ने के साथ ही उसके अनुरूप ही जटिल संदेष उत्पादक प्रणाली की जरूरत होती है अतः जिन जातियों में व्यवहार जटिल सामाजिक अंतःसंबंधों द्वारा घटित होता है, वे इस कारण से एक संप्रेषण प्रणाली विकसित करती है जो इस स्तर के अंतःसंबंध द्वारा उत्पन्न आवष्यकता की पूर्ति कर सकती है।

यदि हम भाषा को केवल संप्रेषण प्रणाली के रूप में देखें तो कई अन्य जातियाँ (प्राणी) भी संप्रेषण करती है। संप्रेषण में किसी संकेत का सक्रिय सामिप्राय संप्रेषण और इसके साथ–साथ प्राप्तकर्त्ता से प्रतिपुष्टि (फीडबैक) शामिल होती है जो सहभागियों के बीच एक बंद लूप (वृत्त) निर्मित करता है।

भाषा, चाहे बोली जाने वाली हो या लिखित हो, मनुष्यों के लिए संप्रेषण का प्रमुख साधन है, लेकिन यह एकमात्र साधन नहीं है। हाव–भाव (संकेतों) की भी वही भूमिका होती है और प्रतीकवाद के अन्य रूपों की भी। किसी को फूल देने का एक विषिष्ट अर्थ होता है तथा विषिष्ट वस्त्र अथवा आभूषण एक ऐसा साधन है जिससे किसी व्यक्ति के संबंधन और निष्ठा का पता चलता है। इस प्रकार संप्रेषण अनेक रूपों में व्याप्त अभिव्यक्ति है। यहां हमारा सरोकार मुख्य रूप से बोली जाने वाली भाषा से है, लेकिन इसे समझने के लिए हमें यह जानना जरूरी है कि यह अन्य संचारी व्यवहारों से किस प्रकार संबंधित है।

1.6.1 जीव–जंतु संप्रेषण

यह सुस्पष्ट है कि विभिन्न जीव–जंतु मौखिक और संकेतात्मक व्यवहार के विविध रूप प्रदर्षित करते हैं। एक सर्वाधिक उल्लेखनीय जाति है मधुमक्खी जो अत्यंत यथार्थता के साथ शहद की स्थिति संप्रेषित कर सकती है और यह कार्य वह अंगों की गतियों के क्रम द्वारा करती है जिसका वर्णन 'नृत्य' के रूप में किया जाता है। मधुमक्खी एक स्थिर धुरी के चारों ओर एकातंर दिषाओं में घूमती है, ताकि लगभग 8 जैसी आकृति बना सके। गति की धुरी ढूँढी गई स्थिति की दिषा की ओर इंगित करती है, गोला बनाने की गति दूरी से संबंधित होती है और मधुमक्खी की उत्तेजना उसकी खोज की प्रचुरता को प्रकट करती है। जब मधुमक्खी शहद के छत्ते के निकट नृत्य कर रही होती है तब अन्य सहायक मधुमक्खियाँ उसके चारों ओर एक गोला बना लेती हैं। कुछ क्षणों तक उसके नृत्य की गति को ध्यान से देखने के बाद, अन्य मक्खियाँ सही दिषा में उड़ कर सही दूरी पर पहुँच कर फूलों पर टूट पड़ती हैं।

संप्रेषण का एक अन्य रूप तब दिखाई देता है जब मधुमक्खियाँ झुंड बनाकर छत्ता बदलती हैं। मक्खियाँ छत्ते के बाहर एक सुविधाजनक स्थान पर एकत्रित होती हैं, प्रत्यक्ष

रूप से काफी समय के लिए ताकि अपने कार्यप्रचालन का एक केंद्र निष्चित कर सकें। तत्पष्चात् सहायक मक्खियाँ विभिन्न दिषाओं में उड़ जाती हैं। जो मधुमक्खियाँ एक सही स्थान ढूँढ लेती हैं वे मुख्य समूह के पास लौट आती हैं और अपनी उत्तेजना द्वारा यह संकेत दे देती है कि उन्हें छत्ता बनाने की जगह मिल गई है। जो मधुमक्खियाँ उपयुक्त जगह नहीं ढूँढ पातीं, वे भी लौट आती है। यदि कई दिषाओं से जगह मिल जाने की सूचना आती है तो झुंड में अनिर्णय की स्थिति दिखाई देती है, वे एक से दूसरी दिषा में तब तक गतिमान होती है जब तक कि किसी एक स्थान के पक्ष में अधिक मत न बन जाए। अपने संप्रेषणात्मक व्यवहार में मधुमक्खियाँ मौखिक ध्वनियों का प्रयोग नहीं करतीं, परंतु उनके हिलते पंखों से होने वाली भिनभिनाहट उनकी उत्तेजना और बलाघात को प्रेषित करने में निष्चित ही एक भूमिका निभाती है जो संभवतः मनुष्यों के ढृढ़ विष्वास की मात्रा के समान है।

मौखिक व्यवहार का दूसरा दिलचस्प रूप है अनुकरणात्मक। जहां तक जातियों के संरक्षण का संबंध है, पक्षियों के ऐसे कई वर्ग हैं जो ध्वनि अनुकरण करते हैं। शायद यह प्रतिध्वनिक प्रवृत्ति की विषेष अभिव्यक्ति मात्र हो जो कि कई जीव–जंतु जातियों में कम मात्रा में पाई जाती है। अनुकरण आम तौर पर एक जाति के भीतर ही होता है।

निम्नतर जातियों की ध्वनीय योग्यता के विपरीत मनुष्य जाति निष्चित रूप से श्रेष्ठ है। बहुत–से जीव–जंतु केवल स्वरों का उच्चारण करते हैं और यह भी शायद केवल एक या कुछ खास जातियां करती हैं, कुछ जातियां एक व्यंजन बोल लेती हैं जो विषेष रूप से बाहर निकलती साँस के संघर्षी व्यंजन होते हैं। स्पर्ष व्यंजन उत्पन्न करने की क्षमता बहुत कम पाई जाती है और वाक् तंत्री स्पर्ष और कंपन का संयोजन बिल्कुल नहीं होता। मनुष्यों की श्रेष्ठता इसमें निहित होती है कि वे बड़ी संख्या में अनुनादी (प्रतिध्वनि), संघर्षी व्यंजनों और स्पर्षी व्यंजनों को बोल सकते हैं, वे क्लिक (खटखट) और अंदर तथा बाहर साँस लेने–छोड़ने की ध्वनियाँ भी उत्पन्न कर सकते हैं, और सबसे बढ़ कर यह कि विविध ध्वनियों के जटिल संयोजन और अनुक्रम उत्पन्न कर सकते हैं। उनकी क्षमताएँ किसी एक भाषा की माँगों से कहीं अधिक होती है और यह बात सभी स्वनात्मक भाषाओं में विस्मयादि और अनुकरणात्मक ध्वनियों की प्रचुरता से स्पष्ट होती है जो किसी एक ही

भाषा में नहीं, अन्य भाषाओं में भी होती हैं। इसके अलावा मनुष्यों में विदेषी शब्द सीखने की भी क्षमता होती है।

1.6.2 सहज–अंतःबोधात्मक बनाम औपचारिक संप्रेषण

संप्रेषण सामान्यतः एक साभिप्राय और नियोजित गतिविधि होती है। तथापि, कभी–कभी हम ऐसी बातें कह देते हैं जो हम नहीं कहना चाहते थे, या हमारा बोलने का तरीका ऐसा प्रकट कर देता है जो हमने सोच रखा था कि प्रकट नहीं करेंगे। यदि हम निम्नतर प्राणियों (जीव–जंतुओं) में संप्रेषण की खोज करें तो हमें ज्ञात होगा कि सहज संप्रेषण जैसी चीज हो सकती है। यदि किसी प्रजाति का कोई एक सदस्य किसी शारीरिक दंष के कारण पीड़ा, भय या अन्य किसी संवेग का अनुभव करता है और चीखता–चिल्लाता है या मुख–विकृत करता है या दूर चला जाता है और उसकी यह प्रतिक्रिया अन्य सदस्यों में उसी के अनुरूप या संबंधित संवेगों को उत्पन्न करती है तो इसका अर्थ है कि संप्रेषण की क्रिया घटित हो गई है, फिर चाहे इसमें कोई चेतन अभिप्राय सम्मिलित हो या न हो। यदि प्रतिक्रिया पद्धति में एक नियमित जन्मजात प्रवृत्ति का अनुपालन किया जाता है तो यह सहज है। यदि यह प्रवृत्ति सामान्यीकृत है और अनुभव द्वारा अनुकूलन के अधीन होती है तो इसे अंतःबोधात्मक कहना बेहतर होगा। जहाँ तक सांकेतिक भाषा के विकसित होने की बात है जिसमें पर्याप्त षिक्षण की आवष्यकता होती है और ध्वनि तथा इसके अर्थ के बीच बहुत से यादृच्छिक संबंध शामिल होते हैं, तो हम एक औपचारिक प्रणाली की बात कर रहे हैं। मनुष्यों की मौखिक भाषा ऐसे संकेतों से बनती है।

इस प्रकार, संप्रेषण के दो मुख्य स्तर निर्धारित किए जा सकते हैं। सभी जीव–जंतुओं में पाए जाने वाला सहज संप्रेषण और दूसरा औपचारिक पारंपरिक या यादृच्छिक संप्रेषण जो केवल मानव जातियों में पाया जाता है। संप्रेषण की औपचारिक प्रणाली में हाव–भाव, भाषा और चित्रात्मक प्रतीक शामिल है। कला के विभिन्न रूप जटिल व्यवहार प्रणाली होते हैं जिनमें अंतःबोधात्मक और औपचारिक संप्रेषण की विषेषताएं शामिल होती हैं। हो

सकता है कि संप्रेषण की औपचारिक प्रणाली अंतःबोध से विकसित हुई हो और इस प्रक्रिया में बहुत प्राचीन कला रूपों ने भूमिका निभाई हो।

1.6.3 मानव संप्रेषण की विषेषताएं

मानव भाषा के गुणधर्मों को निर्धारित करने के लिए अनेकानेक प्रयास किए गए हैं और विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई विषेषताओं की विभिन्न सूचियाँ उपलब्ध हैं। हमने छह मूल विषेषताओं का चयन किया है और यह वर्णन किया है कि किस प्रकार ये मानव भाषा का एक विलक्षण रूप है और अन्य प्राणियों की संप्रेषण प्रणाली में इनके पाए जाने की कोई संभावना नहीं है।

यादृच्छिकता

जीव–जंतुओं के संप्रेषण में प्रायः संकेतों और भेजे गए संदेषों के बीच एक संबंध होता है। उदाहरणार्थ, कोई जीव जब एक दुष्मन को चेतावनी देना चाहता है तब वह आक्रमणकारी रूप धारण कर लेता है। उदाहरण के लिए बिल्ली ऐसी स्थिति में अपनी पीठ को तानती है, गुर्राती है और झपट्टा मारने के लिए तैयार दिखाई देती है।

मानव भाषा में इसका उल्टा होता है और इसमें भाषा के रूप और इसके अर्थ के बीच कोई 'स्वाभाविक/नैसर्गिक' संबंध नहीं होता है। इसका अर्थ है कि प्रयुक्त किए गए प्रतीक यादृच्छिक है। उदाहरणार्थ, डॉग शब्द और इसके प्रतीक चार पैरों वाले पषु के बीच कोई संबंध नहीं है। इसे समान रूप से कुत्ता (हिंदी), शेन (फ्रेंच), हुंड (जर्मन) कहा जा सकता है।

सीखने की आवष्यकता

यह प्रतीत होता है कि जीव जंतु संप्रेषण में 'षिक्षण' (सीखना) द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका बहुत कम है। उनकी भाषा कमोबेष आनुवंषिक रूप से अंतःनिर्मित है। उदाहरण के लिए, मधुमक्खियों का नृत्य, जो मधुमक्खियाँ शहद प्राप्ति की दिषा के बारे में सूचना प्रेषित करने के लिए करती हैं। दुनिया भर की मधुमक्खियों के झुंडों में एक समान ही

नृत्य होता है और चूँकि हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि दुनिया भर की मधुमक्खियाँ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन करें। अतः हमें इस परिकल्पना से सहमत होना होगा कि वे इस भाषा के साथ ही पैदा हुई हैं।

एक अन्य रोचक बात दिखाई देती है वह यह कि यदि मनुष्य के किसी बच्चे को एकांत में पाला–पोसा जाए तो वह भाषा अर्जित नहीं करता, जबकि एकांत में पाली गई चिड़ियाँ ऐसे गाने गाती हैं जो जाने–पहचाने होते हैं। भाषा को अर्जित करने के लिए मनुष्यों को काफी समय तक इसके संपर्क में रहना पड़ता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि मानव भाषा पूरी तरह से परिवेष द्वारा अनुकूलित होती है। चॉम्स्की के अनुसार लोग एक अंतर्जात 'भाषा अर्जन क्षमता' (एल.ए.डी.) के साथ पैदा होते है, लेकिन इस अंतर्जात क्षमता को शुरू करने में परिवेष महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम देखते हैं कि प्रत्येक सामान्य बच्चा 3 वर्ष की आयु से पहले ही एक अत्यंत जटिल व्याकरण प्रणाली को सीख लेता है। भाषा निष्चित रूप से मानव समाजों का एक महानतम आष्चर्य है, और यदि हम एक अंतर्जात भाषा क्षमता से संपन्न नहीं होते तो हम इसमें कुषलता नहीं प्राप्त कर पाते।

अतः हम कह सकते हैं कि मनुष्य और अन्य प्राणी दोनों ही भाषा अर्जित करने में आनुवंषिक रूप से पूर्वप्रवण होते प्रतीत होते हैं, परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्यों में यह गुप्त क्षमता भाषा के संपर्क में काफी समय तक रहने के बाद ही सक्रिय होती है और इसके लिए सावधानीपूर्वक सीखने की जरूरत होती है।

विस्थापन

अधिकांष जीव–जंतु केवल अपने निकट के परिवेष में मौजूद चीजों के बारे में ही संप्रेषण कर सकते हैं। कोई पषु तभी चिल्लाता है जब उसे आस–पास खतरा नजर आता है। वह किसी ऐसे खतरे के बारे में सूचित नहीं कर सकता जो समय और स्थान की दृष्टि से हट कर हो। दूसरी ओर मानव भाषाओं में जितनी आसानी से उपस्थित वस्तुओं के बारे में बताया जा सकता है उतनी ही आसानी से अनुपस्थित वस्तुओं के बारे में भी। मानव भाषा की इस विषेषता को विस्थापन कहते हैं।

तथापि यह प्रतिपादित किया गया है कि मधुमक्खियों के संप्रेषण में विस्थापन की विषेषता पाई जाती है। उदाहरण के लिए जब कोई सहायक मधुमक्खी शहद के स्रोत को ढूँढ लेती है और छत्ते पर लौटकर आती है, तो वह अन्य मधुमक्खियों को शहद के स्थान के बारे में संप्रेषित करने के लिए एक जटिल नृत्य शैली प्रस्तुत कर सकती है। कुछ दूरी पर स्थित इस स्थान के बारे में सूचना प्रदान करने की मधुमक्खी की यह क्षमता निष्चित रूप से यह दर्षाती है कि मधुमक्खियों के संप्रेषण में भी विस्थापन की विषेषता कुछ हद तक विद्यमान है। परंतु निर्णायक कारक का संबंध मात्रा से होता है। मधुमक्खी संप्रेषण में विस्थापन अत्यधिक सीमित रूप में है। मानव भाषा में यह विषेषता काफी व्यापक मात्रा में पाई जाती है। हम लोग वक्ता या श्रोता से समय और स्थान से काफी दूर घटित घटनाओं के बारे में भी बातचीत कर सकते हैं।

संरचना की द्वैतता

जीव–जंतुओं के पास आधारभूत ध्वनियों का भंडार होता है (गाय के पास दस, जबकि गुरिल्ला और चिम्पांजी के पास बीस से तीस के बीच) जिनका प्रयोग वे केवल एक बार कर सकते हैं। इसका तात्पर्य है कि किसी जीव द्वारा भेजे जा सकने वाले संदेषों की संख्या उसकी आधारित ध्वनियों तक ही सीमित होती है अथवा कुछ जटिल प्रणालियों में जैसे डॉल्फिनों द्वारा ध्वनि के कुछ सरल संयोजन प्रयुक्त किए जा सकते हैं और इस प्रणाली के भीतर कोई ज्ञात आंतरिक व्यवस्था नहीं है।

इसके विपरीत, मानव भाषा बहुत अलग तरीके से काम करती है। प्रत्येक भाषा में तीस से चालीस आधारभूत ध्वनियों का समुच्चय होता है जिन्हें स्वनिम (ध्वनिग्राम) कहते हैं। ये स्वनिम अपने आप में सामान्य तौर पर निरर्थक होते हैं। कल्पना कीजिए कि कोई व्यक्ति इन आधारभूत ध्वनियों का उच्चारण कर रहा हो। जैसे–ए............के.............यू............टी....... ....वी.............आर.........एल...............जे.................एच? क्या आपको ऐसा लगता है कि यह व्यक्ति कोई अर्थ प्रेषित कर पाएगा? ये आधारभूत ध्वनियाँ और स्वनिम केवल तभी अर्थपूर्ण होते हैं जब वे भाषा के नियमों के अनुरूप एक–दूसरे से जुड़ते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि मानव भाषा दो स्तरों या परतों में व्यवस्थित है अर्थात् एक परत तो

अलग–अलग ध्वनियों की है जो एक–दूसरे से जुड़कर शब्दों जैसी बड़ी इकाइयों की दूसरी परत बनाती हैं। दो परतों में व्यवस्था का यह प्रकार द्वैतता अथवा दोहरा उच्चारण कहलाता है।

पहले कभी यह माना जाता था कि द्वैतता ऐसी विलक्षण विषेषता है जो मानव भाषा में ही विषिष्ट रूप से पाई जाती है। लेकिन अब कुछ लोगों का दावा है कि यह केवल मानवों के लिए ही विषिष्ट नहीं है, क्योंकि यह चिड़ियों के गीतों में भी मौजूद है जिनमें प्रत्येक अलग ध्वनि निरर्थक है। ध्वनियों का संयोजन ही सार्थक संदेष प्रदान करता है। तथापि, वे जटिल तरीके जिनमें शब्द जोड़कर वाक्यों को असीमित संख्या में बनाया जा सकता है वह वास्तव में मनुष्यों की ही विलक्षण विषेषता है।

अभिसंरचना (Patterning)

द्वैतता के तथ्य के समान ही अभिसंरचना है। यह तो आप जानते ही है कि अधिकांष जीव–जंतुओं की संप्रेषण प्रणालियों में ध्वनियों की एक सरल सूची समाविष्ट होती है। उनकी प्रणाली के भीतर कोई आंतरिक व्यवस्था दिखाई नहीं देती।

दूसरी ओर मानव भाषा में सुनिर्धारित आंतरिक अभिसंरचना होती हैं। यहाँ इस संबंध में सुनिष्चित प्रतिबंध होते है कि कौन से तत्व (ध्वनि, शब्द इत्यादि) एक साथ प्रयुक्त किए जा सकते है और ये किस क्रम में प्रयुक्त किए जाएंगे। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी की "ओ", "पी", "टी" और "एस" ध्वनियों को लीजिए। ये ध्वनियाँ केवल निम्नलिखित सात तरीकों में व्यवस्थित की जा सकती हैं। जैसे–स्पॉट, स्टॉप, ऑप्ट्स, पॉट, पॉट्स, टॉप और टॉप्स। अन्य शब्द जैसे–टसॉप, पटॉस, ऑपस्ट बनाए जाने की कोई संभावना यहाँ संभव नहीं है, क्योंकि अंग्रेजी भाषा के नियमों में इसकी अनुमति नहीं है।

जब शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाए जाते है तब भी इसी प्रकार की अभिसंरचनाओं का पालन किया जाता है। वाक्य स्तर पर भी इसी प्रकार की आंतरिक व्यवस्था होती है। लोग स्वतः ही भाषा के अभिसंरचनात्मक स्वरूप को पहचान जाते हैं और भाषा के संरचित खंडों को जोड़–तोड़ लेते हैं। उदाहरण के लिए :

उस सुंदर स्त्री ने मुझे फूल दिए।

उस स़्त्री ने मुझे फूल दिए।

वह मुझे फूल दे गई।

हम लोग समझ सकते हैं कि ये वाक्य संरचनात्मक रूप से एक समान है। जहाँ तक हमारी जानकारी है, जीव–जंतु संरचना आधारित रूपों का प्रयोग नहीं करते।

सृजनात्मकता

मनुष्य और जीव–जंतु संप्रेषण के बीच सर्वाधिक महत्वपूर्ण भिन्नता यह है कि मनुष्य भाषा का प्रयोग करते समय अनिवार्य रूप से सृजनात्मक होते हैं। दूसरी ओर जीव–जंतु सीमित संख्या में ही संदेष भेज या प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, मधुमक्खियाँ केवल शहद के बारे में ही संप्रेषण कर सकती हैं। डॉल्फिन बुद्धिमान होने के बावजूद एक ही बात के बारे में संप्रेषण करने के लिए बार–बार क्लिक की ध्वनि, सीटियाँ बजाती और चीत्कार करती हैं। मानव भाषा में इस प्रकार का प्रतिबंध नहीं पाया जाता जो कि अवष्य ही एक सृजनात्मक प्रक्रिया है अर्थात् लोग जब भी चाहें बिल्कुल नए उच्चारण उत्पन्न कर सकते हैं। कोई व्यक्ति एक ऐसा वाक्य बोल सकता है जो पहले कभी न कहा गया हो और अत्यंत असंभाव्य परिस्थितियों में बोल सकता है तथापि उसकी बात समझ ली जाएगी। रोजमर्रा के नियमित संप्रेषण में भी व्यक्ति एक ही बात को बार–बार नहीं दोहराता।

अन्य विषेषताएँ

मानव भाषा के अन्य बहुत–से गुणधर्म होते हैं, लेकिन हो सकता है कि वे विलक्षण न हों। इसकी अन्य विषेषताएँ हैं :

1) मौखिक–श्रव्य माध्यम

मानव भाषायी संप्रेषण विषिष्ट रूप से वागेन्द्रिय (मुख) द्वारा उत्पन्न किया जाता है और श्रवणेन्द्रिय (कानों) द्वारा समझा जाता है। तथापि भाषायी संप्रेषण बिना ध्वनि के भी प्रसारित किया जा सकता है अर्थात् लिखकर। इसके अलावा बहुत सी अन्य जातियाँ, उदाहरण के लिए डॉल्फिन भी मौखिक–श्रव्य माध्यम का प्रयोग करती है।

2) प्रसारण, संचारण और दिषात्मक अभिग्रहण

कोई संकेत किसी श्रव्य प्रणाली द्वारा श्रवण सीमा के अंतर्गत सुना जा सकता है और कान की दिषा–खोजी क्षमता द्वारा इसके स्रोत का पता लगाया जा सकता है।

3) तत्काल विलीनता

श्रव्य संकेत अल्पकालिक होते हैं और श्रोता की सुविधा की प्रतीक्षा नहीं करते (जीव–जंतु संप्रेषण या लेखों की भाँति)।

4) भूमिकाओं की परिवर्तनषीलता

किसी भाषायी संकेत को बोलने/भेजने वाला कोई व्यक्ति श्रोता/प्राप्तकर्ता भी हो सकता है।

5) संपूर्ण प्रतिपुष्टि (फीडबैक)

वक्ता जो कुछ भी कहते हैं उसे वे सुन सकते हैं और उसे प्रदर्षित कर सकते हैं (जीव–जंतु प्रेमालाप में प्रायः प्रयुक्त दृष्टिगत प्रदर्षन से विपरीत, जिसे प्रदर्षनकर्ता वाला नहीं देख सकता)।

6) विषेषज्ञता

वाणी की ध्वनि तरंगों का अर्थ संकेत देने के अलावा और कोई कार्य नहीं होता। (कुत्तों की श्रव्य हॉफ से विपरीत, जिसका एक जैविक उद्देष्य होता है)।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) कम से कम किसी एक जीव–जंतु में पाई जाने वाली संप्रेषण प्रणाली बताइए और मानव भाषा से इसकी तुलना कीजिए। क्या आप इनमें कोई संबंध देखते हैं?

....

....

....

....

2) भाषा के कम से कम ऐसे कोई तीन गुणधर्म बताइए, जो जीव–जंतु संप्रेषण प्रणाली में या तो है ही नहीं या बहुत कम है।

....

....

....

....

3) मानव भाषा के किसी एक गुणधर्म का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों की सृजनात्मकता और यादृच्छिकता से क्या अभिप्राय है?

....

....

....

....

4क) इस तथ्य से संबंधित वह गुणधर्म क्या है कि प्रत्येक नई पीढ़ी द्वारा एक भाषा सीखी या अर्जित की जाती है?

....

....

....

....

4ख) जो विषय समय और स्थान की दृष्टि से दूर है उनकी चर्चा करने के लिए मानव भाषा प्रयोक्ताओं की क्षमता का वर्णन करने के लिए किस शब्दावली का प्रयोग किया जाता है।

....

....

....

....

1.7 सारांष

इस इकाई में हमने पढ़ा कि एक सर्वाधिक विषिष्ट विषेषता जो मनुष्यों को अन्य जीव रूपों से अलग करती है वह है अत्यधिक विकसित वह संप्रेषण पद्धति जिसे हम भाषा कहते हैं।

दार्षनिक और वैज्ञानिक दीर्घ काल से भाषा के स्वरूप और प्रयोग पर विचार–विमर्ष करते आए हैं और आज भी इस बात पर मतैक्य नहीं है कि मनुष्यों ने सुनिष्चित रूप से बोलना कब शुरू किया।

भाषा के सीखने के स्तर पर, कई सिद्धांत कार्य करते हैं। इनमें ध्वनि प्रणाली का ज्ञान और शब्दों का अर्थ तथा प्रयोग का उपयुक्त सामाजिक संदर्भ सम्मिलित हैं।

हमने भाषा के उद्भव को एक उपयुक्त परिप्रेक्ष्य में रखने का और मानव भाषा को विलक्षण बनाने वाले कारणों पर प्रकाष डालने का प्रयास किया है।

1.8 बोध प्रष्नों के उत्तर

बोधप्रष्न 1

2) समाज के अन्य सदस्यों के साथ बातचीत, भावनाओं की अभिव्यक्ति

बोधप्रष्न 2

1) बाउ–वाउ (बो–वो) सिद्धांत

2) लोग बातचीत क्यों करते हैं इसके कुछ कारण निम्नलिखित हैं :

- सूचना संप्रेषित करने के लिए
- भावनाओं और संवेदनाओं को संप्रेषित करने के लिए
- कुछ साधारण सामाजिक बातें : उदाहरणार्थ 'आप कैसे हैं?'

बोधप्रष्न 3

1) फैटिक कार्य

2) काव्यात्मक कार्य

3) निदेषात्मक कार्य

4) भाषाविज्ञानी कार्य/संदर्भगत कार्य

5) अभिव्यंजक (भावबोधक) कार्य

6) संदर्भगत संबंधी कार्य

बोधप्रष्न 4

1) जी नहीं, प्रभावी संप्रेषण के लिए सामाजिक संदर्भ अत्यंत आवष्यक है। उदाहरणार्थ, आप अपने बॉस (उच्च अधिकारी) के साथ कार्यालय में तो औपचारिक रूप से बर्ताव करेंगे लेकिन पिकनिक पर अपेक्षाकृत अधिक अनौपचारिक रूप से व्यवहार करेंगे।

बोधप्रष्न 5

2) यादृच्छिकता, विस्थापन और संरचना की द्वैतता

3) उत्तर के लिए भाग 1.6.3 देखिए

4क) वह गुणधर्म जो इस तथ्य से संबंधित है कि प्रत्येक पीढ़ी द्वारा एक भाषा अवष्य सीखी या अर्जित की जाती है, वह है—सीखने की आवष्यकता।

4ख) स्थान और समय की दृष्टि से दूरस्थ विषयों पर चर्चा करने की मानव भाषा प्रयोक्ताओं की क्षमता का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त शब्दावली है विस्थापन।

1.9 अन्य पुस्तकें

अकमाजिआन, एड्रिअन आदि 2003। लिंग्विस्टिक्स : एन. इन्ट्रोटक्षन टू लेंग्वेज एंड कम्यूनिकेषन। नई दिल्ली :प्रैंटिस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।